हिन्दी वर्णमाला :
स्वर एवं व्यंजन

भाषा की सबसे छोटी मूल इकाई ध्वनि है।

वर्ण उस छोटी से छोटी ध्वनि को कहते हैं, जिसके और ज्यादा टुकड़े न किए जा सकें।

जैसे - अ, इ, उ; क्, च्, ट्, त् आदि। वर्णों का प्रयोग ध्वनि के साथ लिपि चिह्नों के लिए भी किया जाता है।

वर्ण भाषा के मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं, इसलिए इनका महत्व शुद्ध उच्चारण के साथ शुद्ध लेखन के लिए भी है।

वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

मानक देवनागरी वर्णमाला

(i) स्वर = अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

(ii) मात्राएँ = ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

(iii) अनुस्वार = अं (ं)

(iv) विसर्ग = अः (ः)

Scanned with CamScanner

(v) व्यंजन = क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

मूर्धन्य → ष् ; दन्त्य → स्

तालव्य ← श् ष् स् ह्

(vi) गृहीत (आगत) = ऑ, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ → ऐच्छिक / अनिवार्य (उर्दू में)

ऑ → (अंग्रेजी)

क़, ख़, ग़, ज़, फ़ → (उर्दू)

(vii) संयुक्त व्यंजन = क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

(क्+श) (त्+र) (ज्+ञ) (श्+र)

(vii) हल् चिह्न = (्)

वर्ण के तीन प्रकार हैं—

(i) स्वर — 11

(ii) व्यंजन — 33

(iii) अयोगवाह — 2

अनुस्वार और अनुनासिक में अन्तर

आधुनिक
हिन्दी लेखन में अनुस्वार और अनुनासिक ध्वनियों को एक ही मानकर वैयक्तिक रुचि के अनुसार अनुस्वार (ं) या अनुनासिक (ँ) लगाने की परम्परा विकसित हुई है। यह वास्तव में बड़ी भूल है। इन ध्वनियों के योग से अर्थ ही परिवर्तित हो जाता है। जैसे -

हँस (क्रिया है),
हंस (पक्षी का नाम है)

अतः इनके प्रयोग में पूर्णता सावधानी जरूरी है।

Scanned with CamScanner